अध्याय 2

अन्नबलियाँ

लैव्यव्यवस्था के इस भाग में जिस दूसरे प्रकार के बलिदान पर चर्चा की गई है वह "अन्नबलि" है, एक ऐसा बलिदान जो गेहूँ और जौ से मिलकर बना था। इस अध्याय में विनियमित बलिदान के लिए इब्रानी शब्द מִנְחָה *(मिनकाह)* है, जिसका शाब्दिक अर्थ है "भेंट।" इसे कई बार "बलिदान के लिए सामान्य शब्द के रूप में उपयोग किया जाता था, [परन्तु] इसे बाद में अनाज और भोजन बलियों के लिए तकनीकी शब्द के रूप में उपयोग किया जाने लगा।"[1] आर. लैर्ड हैरिस ने कहा कि "इसके विधि पूर्ण उपयोग से परे, शब्द का अर्थ 'भेंट' या 'सम्मान की वस्तु' (अर्थात, उत्पत्ति 32:13; 2 शमूएल 8:6)" और यह कि "यह धन्यवाद पर बल देता है।"[2] CEV के द्वारा धन्यवाद देने के विचार का समर्थन किया गया है, जो *मिनकाह* को "धन्यवाद के लिए बलिदान" में अनुवादित करता है (2:1)। लैव्यव्यवस्था 2 में इस शब्द को आदर्श तौर पर "अन्नबलि" (NASB; NIV; NKJV; NRSV; REB), "अनाज का बलिदान" (RSV; NAB; NJB), अथवा "भोजन बलि" (ASV; NJPSV) के रूप में अनुवादित किया गया है।[3]

अन्न बलि इसमें होमबलि के समान थी कि इसे "यहोवा के सम्मुख" लाया जाता था (2:1; देखें 1:2) और इसका जो भाग वेदी पर चढ़ाया जाता था उसे "आग के द्वारा यहोवा के लिए एक सुखदायक सुगंध का बलिदान" समझा जाता था (2:2; देखें 1:9)। यह होमबलि से इसलिए भिन्न थी क्योंकि इसका परिणाम उस व्यक्ति के लिए प्रायश्चित्त नहीं था जो इसे लेकर आया था। यह भी कि, अपेक्षाकृत बलिदान का एक कुछ भाग ही आग में जलाया जाता था; शेष याजकों को उनके खाने के लिए दे दिया जाता था।

अध्याय 2 को तीन भागों में बाँटा जा सकता है। यह पहले बिना पकाए गए अनाज के विषय में नियम देता है। दूसरा, यह उस विषय में बताता है कि जब एक व्यक्ति पकी हुई अन्नबलि चढ़ाता तो क्या करना चाहिए। अन्त में, यह उस विषय में विशेष निर्देश देता है कि किस प्रकार पहली उपज और अनाज को चढ़ाया जाना चाहिए।

बिना पकाए गए अनाज के बलिदान (2:1-3)

1"जब कोई यहोवा के लिये अन्नबलि का चढ़ावा चढ़ाना चाहे, तो वह मैदा चढ़ाए; और उस पर तेल डालकर उसके ऊपर लोबान रखे; 2और वह उसको हारून के पुत्रों के पास जो याजक हैं, लाए। और वह अन्नबलि के तेल मिले हुए मैदे में से

इस तरह अपनी मुट्ठी भरकर निकाले कि सब लोबान उसमें आ जाए; और याजक उन्हें स्मरण दिलाने वाले भाग के लिये वेदी पर जलाए कि यह यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्धित हवन ठहरे। [3]और अन्नबलि में से जो बचा रहे वह हारून और उसके पुत्रों का ठहरे; यह यहोवा के हवनों में से परमपवित्र भाग होगा।"

जैसे ही अध्याय 2 आरम्भ होता है, यहोवा अब अभी मूसा से बलियों के विषय में बात कर रहा था।

आयत 1. होमबलि के समान, **अन्नबलि** भी **यहोवा** के लिए एक स्वैच्छिक बलिदान था। निर्देश आरम्भ होते हैं, **जब कोई अन्नबलि का चढ़ावा चढ़ाए ... ,** यह कहने की बजाए कि, "सभी को निश्चय चढ़ाना चाहिए ..." कोई क्यों ऐसी स्वेच्छा से बलि लेकर आएगा? ऐसा हो सकता है कि अन्नबलि "उन लोगों के लिए एक कम मूल्य वाली होमबलि की भूमिका निभाती थी जो एक पशु का खर्च वहन नहीं कर सकते थे।"[4] यदि ऐसा था, तो इस बलिदान ने कंगाल लोगों के लिए यहोवा को एक बलिदान चढ़ाना सम्भव बना दिया था। इसकी एक अन्य व्याख्या यह है कि अन्न बलि चढ़ाने के अवसर ने एक ऐसे व्यक्ति के लिए जो कि एक किसान था उसके लिए सम्भव बना दिया, कि वह अपनी उपज परमेश्वर को चढ़ा सके, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार वह जो गाय-भैंस या भेड़-बकरियां पाला करता था।[5]

होमबलि और अन्नबलि दोनों में वह उत्तम वस्तु सम्मिलित होती थी जिसे आराधक ला सकता था। यहाँ **मैदे** की बिना पकी हुई बलि होती थी, जिसे **तेल** (सम्भवतः जैतून का तेल) और **लोबान** के द्वारा परिष्कृत किया जाता था। दोनों ने आटे को स्वाद और सुगंध में बेहतर बनाया होगा। इसके अतिरिक्त, धूप मोल लेने के लिहाज़ से महंगी रही होगी। इसी कारण, जो अन्नबलि लेकर आता था वह परमेश्वर को ऐसा कोई बलिदान नहीं चढ़ा रहा था जिसकी उसे कोई कीमत नहीं चुकानी पड़ी थी।

आयत 2. बलिदान चढ़ाने वाले के आटा ले आने और उसमें तेल या लोबान मिला लेने के बाद, याजक कार्य सम्भाल लेता था, केवल **याजकों** को ही वेदी पर बलिदान रखने का अधिकार था। याजक को **वेदी** पर एक भाग **चढ़ाने** का निर्देश दिया गया था जिसे **आग के द्वारा** भस्म कर दिया जाता और इसका परिणाम **यहोवा के लिए एक सुखदाई सुगंधवाला हवन** होता था। अन्य शब्दों में, यह यहोवा को प्रसन्न करता और उसके पास बलिदान लाने वाले को उसके सामने ग्रहणयोग्य बना देता।

अन्न बलि के जिस भाग को याजक वेदी पर चढ़ाता था उसे **स्मरण दिलाने वाला भाग** कहा जाता था। इस अभिव्यक्ति का महत्व अनिश्चित है। एक सुझाव यह है कि "स्मरण दिलाने वाला भाग" सम्पूर्ण, समस्त बलिदान का प्रतिनिधित्व करता था। एक अन्य विचार यह है इस भाग की मंशा इस्राएलियों को यह स्मरण दिलाने की थी कि परमेश्वर ने उनके लिए उस समय क्या किया था जब उसने उन्हें मिस्र से छुड़ाकर बाहर निकाला और उनके साथ वाचा बाँधी, जिससे वे उसके लोग बन गए। एक तीसरी सम्भावना यह है कि, बलिदान के "स्मरण दिलाने वाले

भाग" के माध्यम से, आराधक परमेश्वर के उसे आशीष देने के द्वारा उसे "स्मरण रखने" की प्रार्थना कर रहा था।[6] संभवतः "स्मरण दिलाने वाले भाग" ने इन सभी उद्देश्यों को पूरा किया।

आयत 3. इस आयत के अनुसार, **अन्नबलि** का शेष भाग याजकों, **हारून और उसके पुत्रों** या उसके वंशजों का था। चूंकि यह परमपवित्र यहोवा को चढ़ाया जा चुका था, और इसका एक भाग निवास स्थान के बगल में पवित्र वेदी पर आग के द्वारा भस्म किया गया था, इसे **एक परमपवित्र वस्तु** समझा जाना चाहिए। जैसा की परमेश्वर ने बाद में प्रकट किया, चूंकि यह "परमपवित्र" था, इसलिए इसे याजक को पवित्र स्थान के भीतर खाना पड़ता था-अर्थात, "मिलाप वाले तम्बू के आँगन में" (6:16)। जेकब मिलग्रॉम ने टिप्पणी की,

> ... इसे केवल याजकों के द्वारा वेदी के निकट पवित्र सीवाने के भीतर खाया जा सकता था (तुलना करें 6:26-29; 10:12-13; गिनती 18:9-10), जबकि केवल "पवित्र" अनुलाभों [याजकीय "सुविधाओं" या लाभ] को किसी भी शुद्ध स्थान पर याजक के घराने के सभी पवित्र सदस्यों द्वारा खाया जा सकता था (10:14-15; 22:1-16; गिनती 18:11-19)।[7]

याजक का अन्नबलि का भाग उनकी सहायता के लिए एक महत्वपूर्ण योगदान था।[8]

पकाए गए अनाज की बलियाँ (2:4-10)

4"जब तू अन्नबलि के लिये तन्दूर में पकाया हुआ चढ़ावा चढ़ाए, तो वह तेल से सने हुए अख़मीरी मैदे के फुलकों, या तेल से चुपड़ी हुई अख़मीरी चपातियों का हो। 5और यदि तेरा चढ़ावा तवे पर पकाया हुआ अन्नबलि हो, तो वह तेल से सने हुए अख़मीरी मैदे का हो; 6उसको टुकड़े टुकड़े करके उस पर तेल डालना, तब वह अन्नबलि हो जाएगा। 7और यदि तेरा चढ़ावा कढ़ाही में तला हुआ अन्नबलि हो, तो वह मैदे से तेल में बनाया जाए। 8और जो अन्नबलि इन वस्तुओं में से किसी का बना हो उसे यहोवा के समीप ले जाना; और जब वह याजक के पास लाया जाए, तब याजक उसे वेदी के समीप ले जाए। 9और याजक अन्नबलि में से स्मरण दिलानेवाला भाग निकालकर वेदी पर जलाए कि वह यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्धवाला हवन ठहरे; 10और अन्नबलि में से जो बचा रहे वह हारून और उसके पुत्रों का ठहरे; वह यहोवा के हवनों में परमपवित्र भाग होगा।"

यद्यपि अन्नबलि बिना पके अनाज से मिलकर बनी हो सकती था, यह उस अनाज से भी बनाई जा सकती थी जिसे पकाया गया था। इस प्रकार की बलियों के निर्देश 24:4-10 में मिलते हैं और आमतौर पर 2:1-3 में दिए गए नियमों की नकल करते हैं।

आयतें 4-10. प्रत्यक्ष तौर पर, इस वाक्यांश में **अनाज को पकाने** की तीन कल्पनाएँ की गई हैं। (1) कोई उसे **तन्दूर में** सेकने के द्वारा पका सकता था (2:4)। (2) वह **तवे पर** भेंट को तैयार कर सकता था (2:5)। (3) अनाज को पकाने का

एक और विकल्प उसे **एक कढ़ाही[9] में** पकाना था (2:7)। इसी कारण आराधक को अन्नबलि को तैयार करने के कई चुनाव दिए गए थे। वह इसे बिना पका हुआ चढ़ा सकता था, या वह इसे लगभग किसी भी प्रकार से पका कर याजक को दे सकता था। चाहे बलिदान बिना पका या पका होता (या इसे किस प्रकार पकाया जाता) यह इस्राएलियों पर निर्भर था।

यह वाक्यांश प्रकट चार बातें प्रकट करता है कि इन सभी बलियों में एक बाद एक समान थी। (1) इन्हें **मैदे** से बनाया जाता था (2:4-7)। (2) उन्हें मिश्रण में **तेल** मिलाना पड़ता था (2:4-7)। (3) यहोवा को **अग्नि के द्वारा एक सुखदायक सुगंध के बलिदान के रूप में** एक **स्मरण दिलाने वाला भाग** चढ़ाया जाता था (2:9)। (4) **शेष भाग** याजकों का होता था और **उसे परमपवित्र** समझा जाता था (2:10)।

अन्न बालियों के सम्बन्ध में विशेष नियम (2:11-16)

11"कोई अन्नबलि जिसे तुम यहोवा के लिये चढ़ाओ, ख़मीर मिलाकर बनाया न जाए; तुम कभी हवन में यहोवा के लिये ख़मीर और मधु न जलाना। 12तुम इनको पहली उपज का चढ़ावा करके यहोवा के लिये चढ़ाना, पर वे सुखदायक सुगन्ध के लिये वेदी पर चढ़ाए न जाएँ। 13फिर अपने सब अन्नबलियों को नमकीन बनाना; और अपना कोई अन्नबलि अपने परमेश्वर के साथ बन्धी हुई वाचा के नमक से रहित होने न देना; अपने सब चढ़ावों के साथ नमक भी चढ़ाना। 14यदि तू यहोवा के लिये पहली उपज का अन्नबलि चढ़ाए, तो अपनी पहली उपज के अन्नबलि के लिए आग में भुनी हुई हरी-हरी बालें, अर्थात् हरी-हरी बालों को मींजके निकाल लेना, तब अन्न को चढ़ाना। 15और उस में तेल डालना, और उसके ऊपर लोबान रखना; तब वह अन्नबलि हो जाएगा। 16और याजक मींजकर निकाले हुए अन्न को, और तेल को, और सारे लोबान को स्मरण दिलाने वाला भाग करके जला दे; वह यहोवा के लिये हवन ठहरे।"

यहोवा ने आराधक को इसका चुनाव दिया था कि वह किस प्रकार की अन्न बलि चढ़ाए, इसकी व्यापक छूट की अनुमति दी, परन्तु उसने सब कुछ चढ़ाने वाले के विवेक पर नहीं छोड़ा। परमेश्वर ने सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार के नियम को सम्मिलित किया जिन्हें उसके लोगों को मानने थे जब वह ऐसे बलिदान चढ़ाते थे।

आयत 11. एक नकारात्मक दृष्टिकोण से, आयत 11 आज्ञा देती है कि **आग के द्वारा** चढ़ाई जाने वाली कोई भी **अन्नबलि** (और "वे वेदी पर सुखदायक सुगन्ध के लिए"; 2:12) **खमीर** से नहीं बनी हो सकती थी। इसी प्रकार, किसी में **मधु** भी नहीं मिला हो सकता था। अन्नबलि के रूप में चढ़ाए गए अनाज से टिकियों या पापड़ों को बनाते समय खमीर और मधु को प्रतिबन्धित पर किसी कारण का ब्यौरा नहीं दिया गया है। आम तौर पर, यह माना जाता था कि यह बहिष्कार खमीर

और मधु के बिगड़ने, सड़ने और मृत्यु से जुड़े होने का परिणाम था।[10] हालाँकि, आर. के. हैरिसन ने संकेत किया कि, "यह नहीं समझा जाना चाहिए कि खमीर और मधु अशुद्ध थे या बुराई का चिन्ह थे, क्योंकि वे दोनों पहली उपज के बलिदानों का भाग थे (तुलना करें निर्गमन 23:16-17; 34:22-23; लैव्य. 23:17-18)।"[11] इसके साथ ही उन्होंने कहा,

> यह कहना सही नहीं है, जैसा कि कई लेखकों ने किया है, कि खमीर दूषित होने की प्रक्रिया का प्रतीक है, क्योंकि जब खमीर को भोजन में मिलाया जाता है तो बने हुए उत्पाद के स्वाद, बनावट और पाचनशक्ति को खराब करने की बजाए बढ़ा और सुधार देता है।[12]

सम्भवतः पकी हुई अन्नबलियों से खमीर और मधु को प्रतिबंधित करना इसलिए महत्वपूर्ण था क्योंकि अन्यजाति आराधक अपने अनाज के चढ़ावों में इन वस्तुओं का उपयोग किया करते थे। इसके देने का कारण जो भी रहा हो, प्रतिबन्ध अपने आप में स्पष्ट है: जब अन्नबलि को पकाया जाता, तो इसे न तो खमीर और न ही मधु से पकाया जा सकता था।

आयत 12. यह आयत एक अन्य प्रकार की अन्नबलि के विषय में बात करती हुई प्रतीत होती है, **पहली उपज की भेंट** (רֵאשִׁית, *रे'शिथ*)। चूंकि इस प्रकार की भेंट को **वेदी के ऊपर** जलाया नहीं जाता था बल्कि इसके बजाए इसे याजकों को दे दिया जाता था (23:10, 11; गिनती 18:12; व्यव. 18:4), खमीर पर प्रबंधित लगाने वाला नियम यहाँ लागू नहीं होता।[13]

आयत 13. एक सकारात्मक दृष्टिकोण से, आयत 13 यह बताती है कि, यद्यपि खमीर प्रतिबंधित था, **प्रत्येक अन्नबलि** में **नमक** आवश्यक होता था। एक बार फिर, इस आवश्यकता का तर्क नहीं दिया गया है। वर्णनात्मक वाक्यांश **तुम्हारे परमेश्वर के वाचा के नमक** से पता चलता है कि बलिदान में नमक को सम्मिलित करने का उद्देश्य परमेश्वर और इस्राएल के बीच निरंतर वाचा का प्रतीक होना था (देखें गिनती 18:19; 2 इतिहास 13:5)। यह विचार इस तथ्य पर आधारित था कि प्राचीन संसार में नमक को एक संरक्षक के रूप में उपयोग किया जाता था। हालाँकि इस आज्ञा के पीछे का वास्तविक कारण अज्ञात है, नियम को स्पष्ट तौर पर बताया गया है: पके हुए अनाज की भेंटों में नमक मिलाना पड़ता था।

आयतें 14-16. ये आयतें वर्णन करती हैं की पहली उपज की अन्नबलियाँ किस प्रकार परमेश्वर के सामने अर्पित की जानी चाहिए। हालाँकि ये "पहली उपज" के भाव का उपयोग नहीं करते, शब्द **पहले काटी गई वस्तुओं** का भी यही अर्थ है (2:14)। अन्य नियमों ने इस्राएलियों के लिए उनकी "पहली उपज" को याजकों को देना आवश्यक बना दिया था (23:10, 11; गिनती 18:12; व्यव. 18:4)। स्पष्ट तौर पर, यह विधि यह बात साफ़ करने के लिए दी गई थी कि क्या होना था जब आराधक अपनी पहली उपज का बलिदान निवास स्थान में लेकर आता था। याजकों को उनका भाग प्राप्त होने से पहले, चढ़ाने वाले यहोवा के लिए प्रतीक के तौर पर एक भाग चढ़ाना पड़ता, जिसमें **तेल** और **लोबान** मिलाया जाता (2:15)।

इसके बाद उस भाग को वेदी के ऊपर **आग के द्वारा यहोवा के लिए एक बलि के रूप** में जलाया जाता (2:16)। प्रत्यक्ष तौर पर पहली उपज याजकों के पास चली जाती।

अन्नबलि का महत्व

अपने आप में, अन्नबलि को धन्यवाद पर बल देने के रूप में बताया जा सकता था। यह परमेश्वर को चढ़ाया गया एक "उपहार" था उन सभी उपहारों के उत्तर में जो परमेश्वर अपने लोगों को देता है। इसके अतिरिक्त, चूंकि इसका परिणाम "यहोवा के लिए सुखदायक सुगंध" था (2:2), यह कहा जा सकता था कि इसकी मंशा परमेश्वर की स्वीकृति प्राप्त करने की होती थी।

सम्भवतः इस प्रकार के बलिदान की तुलना एक उदार पिता के लिए एक धन्यवादी पुत्र की प्रतिक्रिया से की जा सकती थी। वह अपने पिता को एक भेंट देता है, "धन्यवाद" कहने के लिए और उसके पिता का निरंतर अनुग्रह भी सुनिश्चित करने के लिए। ऍफ़. मेरिक ने लिखा, "[अन्नबलि] मनुष्य की भक्ति का प्रतिनिधित्व करती है, जिससे वह सभी वस्तुओं पर और उसके ऊपर परमेश्वर की प्रभुता को स्वीकार करता है, उसका एक भाग चढ़ाने से जो उसे अनुग्रह के द्वारा प्रदान किया गया है।"[14]

हालाँकि, प्रायः यह संकेत मिलता है कि यह बलिदान कभी-कभी अपने आप भी चढ़ा दिया जाता था। यह, पेय पदार्थ की भेंट के साथ, बलिदान के एक भाग के रूप में तब चढ़ाई जाती थी जब पशुओं को बलि किया जाता था।[15] गिनती 15:4-10, उदाहरण के लिए, यह स्पष्ट करता है कई प्रकार के पशु बलिदानों के साथ कितनी मात्रा में अनाज चढ़ाया जाना चाहिए।

अनुप्रयोग

जो तुम्हारे पास है उसे दो (अध्याय 2)

मूसा की व्यवस्था में बलिदानों के सम्बन्ध में दिए निर्देश यह चित्रण करते हैं कि परमेश्वर लोगों से वह देने को कहता है जो उनके पास है, चाहे वह बड़ी मात्रा में हो या कम मात्रा में। जो इस्राएली एक होमबलि चढ़ाना चाहता था वह एक बैल ला सकता था; यदि वह एक बैल को चढ़ाना वहन नहीं कर सकता था, तो वह एक मेढ़ा चढ़ा सकता था; यदि वह एक पशु को वहन नहीं कर सकता था, तो वह पक्षियों या अनाज को चढ़ा सकता था। एक किसान जिसके पास कोई भेड़-बकरी मवेशी नहीं होते (वास्तव, में उससे अपेक्षित था) वह अपनी उगाई गई फसल का एक बलिदान दे सकता था।

इस प्रकार की एक प्रणाली ने, एक भाव से परमेश्वर के सभी लोगों को एक स्तर पर रखा। उनसे वह उत्तम वस्तु देने की अपेक्षा की जाती थी: जितना अच्छी तरह से वे उसे वहन कर सकते थे।

नया नियम भी मसीह के चेलों से यही कहता है। सप्ताह के पहले दिन, एक मसीह को "अपनी आमदनी के अनुसार" देना चाहिए (1 कुरि. 16:2), न कि किसी दूसरे की आमदनी के अनुसार। जब यीशु ने एक "निर्धन विधवा" के "दो तांबे के सिक्कों" (लूका 21:1-4) को स्वीकारा तो उसने यह संकेत दिया कि वह जिस नाप से किसी को भेंट को नापता था वह यहूदी अगुवों से भिन्न था। जिस मात्रा में लोग देते हैं वह यीशु को प्रसन्न नहीं करता, वह इससे प्रसन्न होता है कि जो हमारे पास है हम उसे किस प्रकार देते हैं।

कुछ मसीहियों को इस संदेश की आवश्यकता है। वे यह सोचते हैं कि वे धनी या प्रतिभाशाली नहीं हैं, तो वे वह देने में चूक जाते हैं जो वे दे सकते हैं या प्रभु के लिए कर सकते हैं। हम सभी को इस बात का एहसास होने की आवश्यकता है कि यीशु प्रत्येक उपहार पर ध्यान देता है, उसकी सराहना करता है। चाहे हम थोड़ा सा ही क्यों न दें, हमें उतना अधिक से अधिक देना चाहिए जितना हम दे सकते हैं। परमेश्वर के निर्देशों के अनुसार किसी ऐसे व्यक्ति के द्वारा दी गई एक "अन्नबलि" जो इससे अधिक नहीं दे सकता था वह यहोवा के लिए किसी और के द्वारा लाए गए सबसे बड़े बैल के समान ही थी।

स्वेच्छा बालियाँ (अध्याय 2)

होमबलियों, अन्नबलियों और मेलबलियों के विषय में एक तथ्य जिसे हमें प्रभावित करना चाहिए उसका वर्णन लैव्यव्यवस्था के सातवें अध्याय में किया गया है यह कि *वे स्वैच्छिक थीं।* उदाहरण के लिए यहोवा ने इस्राएलियों से अलग-अलग, होमबलियाँ या अन्नबलियाँ या धन्यवाद की बलियों की मांग नहीं की। (निस्संदेह, जिन्होंने ऐसा करने का चुनाव किया, उसके लिए यहोवा ने कुछ नियम स्थापित किए कि इन्हें किस प्रकार चढ़ाया जाना था।)

क्या हम इस अवधारणा को समझते हैं? प्रायः, परमेश्वर के लिए हमारे उपहार केवल उसकी आज्ञा का पालन करने की आवश्यकता के द्वारा प्रेरित होते हैं (1 कुरि. 16:1, 2)। परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना अच्छा है; परन्तु हमें इसलिए देना चाहिए क्योंकि हम ऐसा चाहते हैं, केवल इसलिए नहीं कि हमें देना पड़ेगा।

लोग समाज में स्वेच्छा से देते हैं-क्योंकि वे देना चाहते हैं - बहुत प्रकार के कारणों से: पशुओं की रक्षा के लिए, बेघरों की सहायता के लिए, घायल सैनिकों की सहायता के लिए, वातावरण की सुरक्षा के लिए, और विभिन्न प्रकार की बीमारियों के उपचार की खोज के लिए। क्या हमें अनाथों की सहायता करने, सेवकाई के काम में सहायता करने, सुसमाचार फैलाने और कलीसिया बनाने में सहायता करने के लिए स्वेच्छा से प्रभु की कलीसिया को देने के लिए और भी अधिक आवश्यकता महसूस नहीं करनी चाहिए? निश्चित रूप से, ऐसे कारणों से हमारे हृदय उकसाए जाने चाहिए और इनका परिणाम हमारी उदारता होना चाहिए।

हमारा आदर्श वे मकिदुनियाई भाई होने चाहिए जिन के विषय में पौलुस ने

लिखा,

> ... कि क्लेश की बड़ी परीक्षा में उनके बड़े आनन्द और भारी कंगालपन में उनकी उदारता बहुत बढ़ गई। उनके विषय में मेरी यह गवाही है कि उन्होंने अपनी सामर्थ्य भर वरन् सामर्थ्य से भी बाहर, मन से दिया। और इस दान में और पवित्र लोगों की सेवा में भागी होने के अनुग्रह के विषय में, हम से बार-बार बहुत विनती की (2 कुरि. 8:2-4)।

यदि इस्राएलियों ने स्वेच्छा से होमबलियाँ और अन्नबलियाँ चढ़ाईं, तो क्या हमें स्वेच्छा और उदारता से मसीह के कार्य को बढ़ाने के लिए नहीं देना चाहिए?

कुछ बातों का महत्व है! (अध्याय 2)

पकाई गई अन्नबलि के सम्बन्ध में निर्देश हमारे ऊपर यह छाप छोड़ सकते हैं कि परमेश्वर के लिए कुछ भी ग्रहणयोग्य है। यदि एक इस्राएली यहोवा के लिए अन्नबलि लेकर आना चाहता, तो वह उसे अपनी इच्छा के अनुसार किसी भी तरीके से पका सकता: वह सेंकी जा सकती, भूनी जा सकती थी, या तली जा सकती थी। इस पर ध्यान दिए बिना कि इसे किस प्रकार तैयार किया गया था, यहोवा भेंट को स्वीकार करके आनन्दित था!

हालाँकि, इस तथ्य से निष्कर्ष निकालना गलत होगा कि किसी व्यक्ति ने अपने बलिदान को किस प्रकार तैयार किया था इससे परमेश्वर को कोई फ़र्क नहीं पड़ता था! उदाहरण के लिए, इससे फ़र्क पड़ता था, कि उसने भेंट को खमीर सहित हो या बिना पकाया हो या उसने इसमें नमक मिलाया हो या न मिलाया हो। क्या बलिदान में खमीर मिला हुआ था? वह ग्रहणयोग्य नहीं था! क्या उसे नमक के बिना पकाया गया था? वह ग्रहणयोग्य नहीं था!

पुराना नियम हमें ऐसे लोगों के कई उदाहरण देता जिन्होंने ये सोचा कि आराधना से सम्बन्धित विवरणों से परमेश्वर को कोई फ़र्क नहीं पड़ता था। नादाब और अबीहू ने स्पष्ट तौर पर यह नहीं सोचा था कि जिस प्रकार की आग का उपयोग वे परमेश्वर को चढ़ाई जाने वाली होमबलियों के लिए करते थे उससे उसे कोई फ़र्क नहीं पड़ता था (लैव्य. 10:1-11)। उज्जा ने उस समय जब दाऊद उसे लेकर यरूशलेम जा रहा था निश्चय ही ये सोचा होगा कि यदि वह वाचा के सन्दूक को छू लेगा तो इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ेगा (2 शमूएल 6:7)। स्पष्ट तौर पर राजा उज्जियाह ने यही सोचा होगा कि परमेश्वर को इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ेगा यदि वह, एक राजा याजक के बजाए, मंदिर में धूप अर्पित करेगा (2 इतिहास 26:16-23)। इन सभी मनुष्यों के द्वारा भोगे गए परिणामों ने यह प्रदर्शित किया कि कुछ बातों से परमेश्वर को फ़र्क पड़ता है!

आज हमारी आराधना के सम्बन्ध में कोई वस्तु परमेश्वर को प्रभावित कर सकती है? अधिकतर लोग इस बात से सहमत हैं कि इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि हम गीत किताबों के साथ या उनके बिना गाते हैं, या फिर हम सोप्रानो, अल्टो, टेनोर, या बेस गाते हैं। क्या यह ये साबित करता है कि कसी बात से कोई फ़र्क

नहीं पड़ता? इफिसियों 5:19 और कुलुस्सियों 3:16 में दिए गए निर्देशों से, यह प्रतीत होता है कि परमेश्वर को इस बात से फ़र्क पड़ता है कि हम ठीक प्रकार के गीत गा रहें हैं - "भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत।" क्या किसी और बात से फ़र्क पड़ता है? कुछ धार्मिक समूह कहते हैं, "इस बात से कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि चाहे वे आराधना में संगीत के मैकेनिकल यंत्रों का उपयोग करें या नहीं।" क्या वे सुनिश्चित हो सकते हैं? पवित्रशास्त्र स्पष्ट करता है कि हमें ठीक उसी प्रकार गाना चाहिए, जिस प्रकार व्यवस्था में यह स्पष्ट किया गया था कि किस प्रकार कि किस प्रकार की आग का उपयोग किया जाए (लैव्य. 10:1-11)। क्या हम परमेश्वर को प्रसन्न करने के विषय में निश्चित हो सकते हैं यदि हम वह न करें जो उसने करने को कहा है? इसका सबसे सुरक्षित अनुसरण करने का मार्ग ठीक उसी प्रकार करना है जैसा उसने करने के लिए कहा है।

एक सत्य निश्चित है: कुछ बातों से परमेश्वर को कोई फ़र्क नहीं पड़ता, परन्तु कुछ बातों से उसे फ़र्क पड़ता है!

अन्नबलि: "मेरे काम के लिए, धन्यवाद, परमेश्वर" (अध्याय 2)

निरन्तर बेरोज़गारी और आर्थिक मामलों के इस दिन, "मेरे काम के लिए, धन्यवाद परमेश्वर" वाक्यांश प्रार्थना में उपयोग करने के लिए उपयुक्त रहेगा। हम तनाव और समय सीमा के युग में रहते हैं। कई लोगों के लिए काम एक आशीष की बजाए एक श्राप बन गया है। हालाँकि, अन्नबलि का महत्व मनुष्य को यह दिखाने के लिए था कि परमेश्वर जीवन में कार्य को एक आशीष और आवश्यकता समझता है, और उसने मूसा की व्यवस्था के अधीन उस अवधारणा का प्रतिनिधित्व करने के लिए इस अन्नबलि को पवित्र किया।

इस भेंट के दुविधा में डालने वाले कई मामलों में से एक इसे कुछ टिप्पणीकारों और बाइबल संस्करणों के द्वारा दिया गया नाम है। इब्रानी शब्द מִנְחָה *(मिनकाह)*, सन्दर्भ के कर्ण, आमतौर पर "अन्नबलि" में अनुवाद किया जाता है (NASB; NKJV; NLT; NIV)। KJV में "माँस बलि" है हालाँकि कोई माँस सम्मिलित नहीं था। सेप्टुजिंट मुख्य तौर पर "भेंट" (δῶρον, *डोरोन)* कहता है। यही अर्थ पुराने नियम में अन्य स्थानों पर भी पाया जाता है। उदाहरण के लिए याकूब ने अपने भाई, एसाव के लिए एक "भेंट" भेजी, और अपने बुढ़ापे में मिस्र में यूसुफ़ के पास एक "भेंट" भेजी (उत्पत्ति 32:13 [14]; 43:11)। जब भी इन सन्दर्भों में "भेंट" शब्द का उपयोग किया गया है, यह जिसे भेंट दी गई थी उसके प्रति प्रतिष्ठा और अधिकार स्वीकार का संकेत देता है। उदधृत दोनों मामलों में, इसका तात्पर्य भेंट प्राप्त करने वाले व्यक्ति का अनुग्रह प्राप्त करना था।[16]

होमबलि की तुलना में हम अन्नबलि में एक अंतर देखते हैं कि अन्नबलि में कोई प्राण नहीं लिया जाता था। पहले समय से ही, परमेश्वर ने कहा था कि लहू में जीवन है (लैव्य. 17:11, 14; देखें उत्पत्ति 9:4)। केवल उसने ही जीवन प्रदान किया था: तो यह उसकी व्यवस्था पर निर्भर करता था कि कौन सा जीवन लिया जा सकता था और कौन सा नहीं लिया जा सकता था। एक बार जीवन प्रारम्भ में

परमेश्वर के द्वारा सृजा गया था, इसके बाद मनुष्य का भाग जीवन का प्रजनन करना था, मनुष्यों के प्रजनन के द्वारा और भूमि की उपज दोनों के द्वारा जो की भूमि में उसके परिश्रम से उत्पन्न होगी (उत्पत्ति 1-4)। होमबलि (हाबिल का बलिदान) और भूमि की उपज (कैन का बलिदान) परमेश्वर के प्रति समर्पण और धन्यवाद व्यक्त करने के तरीके थे (उत्पत्ति 4)। कैन का बलिदान अस्वीकार किए जाने का महत्व इसमें है कि कैन "भूमि की उपज" में से कुछ लेकर आया (उत्पत्ति 4:3)। यह "भेड़-बकरियों के *पहलौठों"* के विपरीत था जिन्हें हाबिल लेकर आया था (उत्पत्ति 4:4; बल दिया गया है)। हाबिल की भेंट ने एक प्रकार से लैव्यव्यवस्था 1 में होमबलि की आवश्यकताओं से मेल खाया।

अन्नबलि ने न केवल परमेश्वर की आशीष के अधीन, मनुष्य के परिश्रम की उपज का प्रतिनिधित्व किया; बल्कि इसमें चढ़ाने वाले का अतिरिक्त परिश्रम भी सम्मिलित था। अनाज को उसकी प्राकृतिक अवस्था में नहीं चढ़ाया जा सकता था, जो है, जिस प्रकार इसे काटा गया था। इसे पीसा, छाना, और भूना और कुछ भागों में मिलाकर इसे प्रस्तुत करने से पहले पकाना होता था।

अन्नबलि का एक अन्य महत्व यह भी है कि यह आराधक के परिश्रम की सम्पूर्ण उपज नहीं होती थी, बल्कि छोटे से भाग की अभिषिक्त वस्तु होती थी। परमेश्वर ने सम्पूर्ण फसल की मांग नहीं की, परन्तु उसने पहली और सबसे उत्तम भाग उसे देने की मांग की।

बलिदान की आवश्यकताएँ (2:1, 2, 4-7, 11-16)। पहली वस्तु जिसकी आवश्यकता थी वह था "मैदा" (2:1, 2)। यह उसी के समान है जो हम आज दुकान में खरीदेंगे। इसे बारीकी से पीसकर उपयोग में लाया जाता है। सभी पतवार, गंदगी, और असमान कणों को हटा दिया गया है। इस्राएल के समय में, इस तरह की गुणवत्ता के आटे को बनाने में काफी अधिक प्रयास करना पड़ता था। जो औसत रोटी एक इस्राएली के द्वारा खाई जाती थी वह बनावट में मोटी होती थी।

मैदे की अवधारणा में एक प्रकार से मसीह को ही प्रदर्शित किया गया है। इसकी शुद्धता समरूपता (खर पतवार और गंदगी रहित), में यह उत्तम था। चूंकि मसीह "पाप रहित" (इब्रा. 4:15) था, उसमें कोई भी असमता नहीं थी। वह "कल और आज और हमेशा" एक सा है (इब्रा. 13:8)। पौलुस ने मसीह होने के नाते हमें स्मरण करवाया कि परमेश्वर हमसे "मसीह के दिन तक दोष रहित और निष्कपट" रहने की आशा करता है (फिलि. 1:10)। एक व्याख्या के अनुसार जिस यूनानी शब्द को "निष्कपट" (εἰλικρινής, *आइलिक्रिन्स*) में अनुवाद किया गया है उसका शाब्दिक अर्थ "सूर्य के प्रकाश में परखा गया।"[17] कई बार मिट्टी के बर्तन आग में टूट जाते थे, तो बेईमान व्यापारी मोम से दरारों को भरकर उन्हें पूरे दाम पर बेच देते थे मानो वह उत्तम थे। हालाँकि, सचेत ग्राहक धूप में मिट्टी के बर्तनों को परखकर मोम का पता लगा सकते थे। यह परीक्षण का विचार - मोम रहित होना - नैतिक क्षेत्र में स्थानांतरित हो गया था। यह चित्रण यह संकेत करता है हमारे जीवनों में शुद्धता और समरूपता उस संसार के विपरीत है जहाँ पर लोग अशिष्ट और उपहास करने वाले हैं।

अन्नबलि की दूसरी आवश्यकता मैदे में कोई तेल मिलाना था (2:1, 2, 4, 5, 7)। चूंकि शब्द यह स्पष्ट नहीं करता कि किस प्रकार का तेल उपयोग किया जाए, यह निश्चय ही जैतून का तेल रहा होगा, इस्राएल के द्वारा उपयोग किया जाने वाला सबसे साधारण तेल।[18] अन्न के समान ही, यह भी मनुष्य के परिश्रम की उपज था। जैतून को एकत्र किया जाता था, इसके बाद पीटा जाता था, और इसके बाद तेल में से अशुद्धियों को निकालने के लिए इसे छाना जाता था। तेल का उपयोग साधारण तौर पर पकाने के लिए किया जाता था और अनाज के आटे का उपयोग गूंथने के लिए किया जाता था।[19] पुराने नियम में, जैतून के तेल का महत्व इसमें भी पाया जाता है, कि इसका उपयोग परमेश्वर की आत्मिक सेवा के लिए किसी ऐसे व्यक्ति का अभिषेक था जिसे परमेश्वर के द्वारा नियुक्त किया गया था। भविष्यद्वक्ताओं को इस्राएल के राजाओं का अभिषेक करने के लिए भेजा जाता था यहाँ तक कि आस पास के क्षेत्रों के राजाओं के लिए भी (देखें 1 राजा. 19:15, 16)।

नए नियम में, पवित्र आत्मा परमेश्वर का उसके कार्य में यीशु मसीह के साथ अभिषिक्त करने वाला प्रतिनिधि है। यीशु के बपतिस्मा पर (लूका 3:21, 22), आत्मा उसके ऊपर एक कबूतर के रूप में उतरा, और परमेश्वर ने मसीह की पहचान और उसकी सेवा की एक घोषणा की। जब मसीह नासरत के आराधनालय में था, उसने इन शब्दों के द्वारा स्वयं के परमेश्वर द्वारा भेजे जाने का परिचय दिया:

> "प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिये कि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिये भेजा है कि बन्दियों को छुटकारे का और अंधों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूँ और कुचले हुओं को छुड़ाऊँ, और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूँ" (लूका 4:18, 19)।

क्योंकि आत्मा हम में वास करता है, हम परमेश्वर के द्वारा पहचाने और उसकी संतानों के रूप में जाने जाते हैं (प्रेरितों 2:13; गला. 4:6; इफि. 1:13, 14)।

तीसरी आवश्यकता बलिदान में लोबान मिलाना थी (2:1, 2)। पूर्वी देशों में यह इत्रों में सबसे महंगा इत्र था । मधु के लिए मना किया गया था (2:11) क्योंकि उसमें खमीर उठ जाता था। हालाँकि, लोबान की गुणवत्ता लम्बे समय तक बनी रहती थी, इसका पूर्ण रूप तब निकल कर बाहर आता था जब इसे आग में धूप के रूप में जलाया जाता था। पुराने नियम के वचनों में यह "पवित्रता और भक्ति का प्रतीक है (तुलना करें भजन 141:2)।"[20] संभवतः इस बलिदान में इसके महत्व की मुख्य बात शब्द "स्मरण दिलाने वाले" (2:2) में देखी जा सकती है। आम तौर पर, जले हुए अनाज और रोटी की एक मनभावन सुगंध नहीं होती, परन्तु धूप का मिलाया जाना जलने की गंध को ढांप लेता था, और दो आवश्यकताओं का मेल यहोवा के सामने एक सुखदायक सुगंध के रूप में उठता था। हम वेदी पर लोबान में एक प्रार्थना के रूप को देख सकते हैं परन्तु इसे समझ नहीं सकते। हमें यह स्मरण आता है कुरनेलियुस को एक स्वर्गदूत के द्वारा यह बताया गया था कि उसकी प्रार्थनाएं और दान स्मरण के लिए यहोवा के सामने पहुंचे हैं (प्रेरितों 10:4)। प्रकाशितवाक्य में, परमेश्वर के मन्दिर सिंहासन के सामने

परमपवित्र स्थान में, ऊपर उठने वाली धूप, संतों की प्रार्थनाओं से जुड़ी हुई थीं (प्रका. 5:8; 8:3)।

हम देखते हैं कि मसीह प्रतिरूप के रूप में, परमेश्वर के सामने स्मरण दिलाने के लिए प्रार्थनाएं चढ़ाता है - मसीह, पापरहित (मैदे के समान), आत्मा से अभिषिक्त (तेल), पिता के सामने प्रार्थनाओं को चढ़ाता हुआ (लोबान)। इब्रानियों 5:7 कहता है, "यीशु ने अपनी देह में रहने के दिनों में ऊँचे शब्द से पुकार-पुकारकर और आँसू बहा-बहाकर उससे जो उसको मृत्यु से बचा सकता था, प्रार्थनाएँ और विनती की, और भक्ति के कारण उसकी सुनी गई।"

इसके लिए और सभी बलियों के लिए चौथी आवश्यकता नमक था (2:13)। साधारण नमक सदा से हमारे भोजन में आवश्यक और महत्वपूर्ण भाग रहा है। हालाँकि, प्राचीन पूर्वी संस्कृतियों में नमक के अन्य महत्वपूर्ण उपयोग भी थे। यह किसी समझौते के ठीक बाद नमक युक्त भोजन खाने के द्वारा मित्रता या एक वाचा पर मुहर लगाने का एक परंपरागत तरीका था। इसका संकेत याकूब की अपने ससुर, लाबान के साथ वाचा में दिया गया है (उत्पत्ति 31:44-46)। इसे विशेष तौर पर इस्राएल के साथ परमेश्वर की वाचा का भाग बताया गया है (गिनती 18:19; 2 इतिहास 13:5)।

जैसी ही हम इन विचारों को मसीह के प्रतिरूप पर लागू करते हैं, तो यह देखा जा सकता है कि उसके लहू के बिना, परमेश्वर और हमारे बीच में कोई सम्बन्ध या वाचा की मुहर नहीं है। जब यिर्मयाह ने एक नई प्रकार की वाचा की भविष्यद्वाणी की जो परमेश्वर और नए इस्राएल (कलीसिया) के बीच बांधी जाएगी, तो उसने कहा कि यह पुरानी वाचा से भिन्न होगी (यिर्म. 31:31-34)। इस वाचा की शर्तों को इब्रानियों 8:8-12 में दोहराया गया है। नई वाचा के अलग-अलग गुणों में से एक यह है कि परमेश्वर "उनके अधर्म के विषय में दयावन्त होगा, और उनके पापों को फिर स्मरण न करेगा।" (इब्रा. 8:12)। नई वाचा में परमेश्वर के निकट आना केवल मसीह के लहू के द्वारा सम्भव है (इब्रा. 9:14-16)। यह वाचा की मुहर (नमक) के समान कार्य करता है जब इसे हमारी आज्ञाकारिता के साथ बपतिस्मा के माध्यम से उस वाचा के साथ जोड़ा जाता है (प्रेरितों 2:38; इफि.1:7)।

वेदी पर भागीदारी (2:2, 9)। अध्याय 1 में वर्णन की गई होमबलि में, एक भी बलिदान किसी के साथ नहीं बाँटा गया। इसे पूरी तरह से परमेश्वर की प्रसन्नता के लिए भस्म कर दिया जाता था। हालाँकि, अन्नबलियों के निर्देशों में, मैदा या अनाज का केवल एक छोटा भाग ही अन्य आवश्यक सामग्रियों के साथ मिलाकर परमेश्वर को चढ़ाया जाता था। बलिदान का शेष बचा हुआ भाग अब भी पवित्र समझा जाता था (2:3, 10), परन्तु याजकों के द्वारा शेष भाग को उनके खाने के लिए रखना स्वीकार्य था। चूंकि लेवी के गोत्र को इस्राएल के लिए याजकीय गोत्र के रूप में चुना गया था, तो यह आवश्यक था उनकी सहायता, उनके भोजन के आवंटन सहित, अन्य गोत्रों के द्वारा उपलब्ध करवाई जाए। परमेश्वर उन पूर्व शर्तों और आवश्यकताओं में बलिदान को उनके लिए छोड़ रहा था और इसके साथ ही उन दशमांशों में जिनका नियम उसने बनाया वह इसका ध्यान रख रहा था।

याजकीय कार्य को "पवित्र" कार्य समझा जाता था। इसी कर्ण, निवासस्थान के सम्बन्ध में, जो कुछ भी याजक छूता, पहनता, और जिसके साथ भी कार्य करता उसे पवित्र समझा जाता था। याजक परमेश्वर के साथ एक विशेष सम्बन्ध में होते थे, और उनके चरित्र और आचरण सर्वोच्च महत्व के विषय थे।

हमें मसीह के रूप में यह स्मरण दिलाया जाता है हम अपने परमेश्वर के साथ एक विशेष सम्बन्ध में हैं, और हमारे चरित्र और आचरण भी सर्वोच्च महत्व के हैं। पतरस ने कहा,

> तुम भी आप जीवते पत्थरों के समान आत्मिक घर बनते जाते हो, जिससे याजकों का पवित्र समाज बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य ... पर *तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो,* इसलिये कि जिसने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो (1 पतरस 2:5-9; बल दिया गया है)।

परमेश्वर के सामने कार्य की एक बलिदान के रूप में भेंट। एकदम आरम्भ से ही कार्य मनुष्य के साथ परमेश्वर के सम्बन्ध का एक भाग था। वह श्राप से पहले वहीं पर था (उत्पत्ति 2:15)। कनान देश में इस्राएल का अधिकार कर लेना उस भूमि, बगीचों और दाख की बारियों को जोतने की एक बुलाहट थी जिन्हें परमेश्वर उस देश निवासियों को वहाँ से बाहर निकालते समय देगा। उनकी निरन्तर उत्पादकता केवल उनके शरीर के भले-चंगे रहने को सुनिश्चित नहीं करेगी, बल्कि उस वंश के लिए भी एक निरन्तर प्रक्रिया सुनिश्चित करेगी जो उनके द्वारा आने वाला था (उत्पत्ति 12:1-3; 22:18)। इस्राएल परमेश्वर का सबसे पहला चुना हुआ राज्य था, और उस साम्राज्य में उनका कार्य उनकी आत्मिक के साथ-साथ शारीरिक सम्पूर्णता भी सुनिश्चित करेगा।[21]

आज आत्मिक इस्राएल की बुलाहट, जो कि कलीसिया है, अब भी वही है। हमें परमेश्वर की दाख की बारियों में परिश्रम करना है, जो कि, मनुष्यों का संसार है। इसका परिणाम एक समान होगा, अर्थात शारीरिक और आत्मिक कल्याण पर परमेश्वर की ईश्वरीय आशीष। चाहे हम परमेश्वर के राज्य में सम्पूर्ण-समय कार्य करने वाले मज़दूर हो या नहीं, हमें यह स्मरण दिलाया गया है की हमारे परिश्रम का फल परमेश्वर को चढ़ाया जाना चाहिए।

पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 3:9 में प्रभु के साथ हमारे कार्य का चित्रण करने के लिए इन तीन परिभाषाओं का उपयोग किया: "हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं; तुम परमेश्वर की खेती और परमेश्वर की रचना हो।" 5 से लेकर 8 आयत में उसने इस बात पर बल दिया कि कार्य करना महत्वपूर्ण है, परन्तु इसके बढ़ने का निर्णय परमेश्वर के द्वारा लिया जाता है। पौलुस ने आगे कहा इस्राएलियों के द्वारा परमेश्वर के को चढ़ाए गए उत्तम और पहली उपज के बलिदानों के समान, हमें उसके राज्य में गुणवत्तापूर्ण करने के लिए सावधान रहना चाहिए, क्योंकि समय और न्याय हमारे कार्य की स्थिरता को प्रकट करेगा:

परमेश्वर के उस अनुग्रह के अनुसार जो मुझे दिया गया, मैं ने बुद्धिमान राज मिस्त्री के समान नींव डाली, और दूसरा उस पर रद्दा रखता है। परन्तु हर एक मनुष्य चौकस रहे कि वह उस पर कैसा रद्दा रखता है। क्योंकि उस नींव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है, कोई दूसरी नींव नहीं डाल सकता। यदि कोई इस नींव पर सोना या चाँदी या बहुमूल्य पत्थर या काठ या घास-फूस का रद्दा रखे, तो हर एक का काम प्रगट हो जाएगा; क्योंकि वह दिन उसे बताएगा, इसलिये कि आग के साथ प्रगट होगा और वह आग हर एक का काम परखेगी कि कैसा है। जिसका काम उस पर बना हुआ स्थिर रहेगा, वह मज़दूरी पाएगा। यदि किसी का काम जल जाएगा, तो वह हानि उठाएगा; पर वह आप बच जाएगा परन्तु जलते-जलते (1 कुरि. 3:10-15)।'

उपसंहार। हमें यह एहसास होना चाहिए कि हमारे सभी परिश्रमों में यह परमेश्वर ही है जो आशीष देगा और बढ़ाएगा। उन सभी आशीषों के बदले में परमेश्वर ने केवल हमारे नम्र धन्यवाद और स्तुति की मांग की है। पौलुस ने घोषणा की, "कलीसिया में और मसीह यीशु में उसकी महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमीन" (इफि. 3:21)।

मैक्स टारबेट

समाप्ति नोट्स

[1]क्लाइड एम. वुड्स, *लैव्यव्यवस्था - गिनती - व्यवस्थाविवरण*, द लिविंग वे कमेंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टमैंट, वॉल्यूम 2 (श्रेवीपोर्ट, एलए.: लैम्बर्ट बुक हाउस, 1974), 6. [2]आर. लैर्ड हैरिस, "लेवीटिकस," इन *द एक्सपोजिटर्स बाइबल कमेंट्री*, वॉल्यूम 2, *उत्पत्ति - गिनती*, एड. फ़्रैंक ई. गेबेलेन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ोंडर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1990), 541. [3]KJV मिनकाह को "मांस की भेंट" के रूप में अनुवादित करती है, जो "'भोजन की भेंट' को अनुवादित करने का मध्ययुगीन तरीका था" (आर. के. हैरिसन, *लैव्यव्यवस्था*, द टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज़ [डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस : इंटर-वर्सीटी प्रेस, 1980], 49). "मांस की भेंट" आधुनिक पाठकों के लिए भ्रामक है, क्योंकि जानवरों का मांस इस बलिदान में शामिल नहीं था। [4]बिल टी. आर्नोल्ड एंड ब्रायन ई. बेयर, *लैव्यव्यवस्थाद ओल्ड टैस्टमैंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक्स, 1999), 120. [5]जॉर्ज ए. एफ. नाइट, *लेवीटिकस*, द डेली स्टडी बाइबल (फिलेडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रेस, 1981), 18. [6]जेरार्ड वॉन रैड, *ओल्ड टैस्टमैंट थिओलॉजी*, ट्रांस. डी. एम. जी. स्टाकर (न्यू यॉर्क: हार्पर एंड रो, 1962), 257. [7]जैकब मिलग्रॉम, "द बुक ऑफ़ लैव्यव्यवस्था" इन *द इंटरप्रेटर्स वन-वॉल्यूम कमेंट्री ऑन द बाइबल*, एड. चार्ल्स एम. लेमन (नैशविल: एबिंगडन प्रेस, 1971), 69. [8]एरहार्ड एस. गेर्स्टनबर्गर, *लैव्यव्यवस्था: ए कमेंट्री*, ट्रांस. डगलस डब्ल्यू. स्टॉट, ओल्ड टैस्टमैंट लाइब्रेरी (लुइसविल: वेस्टमिंस्टर जॉन नॉक्स प्रेस, 1996), 42. [9]"कढ़ाही" के लिए शब्द מַרְחֶשֶׁת *(मर्केशेशेथ)* एक ढकन सहित एक सेकने वाली कढ़ाही का सन्दर्भ देता है। (लुडविग कोहलर एंड वाल्टर बौमगार्टनर, *द हिब्रू एंड अरैमिक लेक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टेस्टामेंट*, स्टडी एड., ट्रांस. एंड एम्. ई. जे. रिचर्डसन [बोस्टन: ब्रिल, 2001], 1:634.) [10]जेकब मिलग्रॉम, *लैव्यव्यवस्था 1-16*, द एंकर बाइबल (न्यू यॉर्क: डबलडे, 1991), 188-90.

[11]हैरिसन, 54. देखें 2 इतिहास 3:15. [12]पूर्वोक्त., 55. यद्यपि नए नियम में "खमीर" का उपयोग नकारात्मक अर्थ में किया गया है (मत्ती 16:6; 1 कुरि. 5:8), इसका उपयोग सकारात्मक अर्थ (मत्ती 13:33) के साथ भी किया जाता है। खमीर की महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह अपने पर्यावरण में रिस जाती है और प्रभाव डालती है। अपने आप में, यह शब्द तटस्थ है; यह किस प्रकार

का प्रभाव डालता है - चाहे अच्छा या बुरा - यह संदर्भ पर निर्भर करता है। [13]वुड्स, 7. [14]एफ. मेरिक, “लैव्यव्यवस्था” इन *द पुल्पिट कमेंट्री* , वॉल्यूम 2, लैव्यव्यवस्था, गिनती, एडी. एच. डी. एम स्पेंस और जोसेफ एस. एक्सेल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1950), 23. [15]“अन्नबलि को नियमित तौर पर ‘होमबलि’ और ‘मेलबलियों’ के साथ परमेश्वर के सामने रखा जाता था (उदहारण, लैव्यव्यवस्था 9:4, 17; 14:10, 20, 21, 31; 23:13, 37; गिनती 8:8)” (रिचर्ड ई. एवरबेक, “सैक्रिफाइसेस एंड ऑफ़रिंग्स,” इन *डिक्शनरी ऑफ़ द ओल्ड टेस्टामेंट: पेंटाटुएक*, एड. टी. डेस्मंड एलेग्ज़ेंडर एंड डेविड डब्ल्यू. बेकर [डाउनर्स ग्रोव, इल्लिनोय.: इंटरवर्सिटी प्रेस, 2003], 714)। [16]एस. एच. केल्लोग्ग, *द बुक ऑफ़ लैव्यव्यवस्था,* 3rd एड. (एन. पी.: ए. सी. आर्मस्ट्रांग एंड सन*,* 1899; रीप्रिंट मिनियापोलिस: क्लोक एंड क्लोक क्रिस्चियन पब्लिशर्स*,* 1978)*,* 6*3.* [17]फ्रेडरिक बक्शेल, “εἰλικρινής**,**” इन *थिओलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ़ द न्यू टेस्टामेंट,* एड. जेरार्ड कित्टेल, ट्रांस. एंड एड. ज़ेफ्ररी डब्ल्यू**.**, ब्रोम्ली (ग्रैंड रैपिड्स**,** मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1964)**,** 2:397. [18]निकट पूर्व में रहने वालों के द्वारा यह अब भी उपयोग किया जाता है। [19]हैरिसन, 50. [20]पूर्वोक्त।

[21]केल्लोग्ग, 66.